श्रीवीतरागाय नमः ।

षट् द्रव्यकी आवश्यकता व सिद्धि
और
जैन साहित्यका महत्व ।

लखनऊकी महासभामें जैन साहित्य सभाके लिये

लेखकः—

श्रीमान् पं० मथुरादासजी–बनारस, पं० अजितकुमारजी शास्त्री,
पं० बुद्धिलालजी श्रावक, पं० बनवारीलालजी स्याद्वादी,
और व्याकरणरत्न पं० सतीशचंद्रजी न्यायतीर्थ–काशी ।

प्रकाशकः—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
मालिक, दिगम्बर जैन पुस्तकालय–चन्दावाड़ी–सूरत ।

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस–सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया ।

विक्रम सं० १९८४] वीर सं० २४५३ [ई० सन् १९२७

मूल्य–एक रुपया ।